Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

Original Article

छत्तीसगढ़ में नगरीकरण की प्रवृत्ति एवं स्तर

डॉ. संगीता शुक्ला[1], अर्चना गढ़वाल[2]

[1]सहायक प्राध्यापक भूगोल, शासकीय बिलासा कन्या, महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

[2]सहायक प्राध्यापक भूगोल, शासकीय महामाया महाविद्यालय रतनपुर जिला बिलासपुर (छ.ग.)

Manuscript ID:
JRD -2026-180737
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 7
Pp. 179-183
July- 2026
Submitted: 16 June. 2026
Revised: 26 June. 2026
Accepted: 11 July. 2026
Published: 31 July. 2026

सारांश

यह शोधपत्र छत्तीसगढ़ में नगरीकरण की प्रवृत्ति एवं स्तर का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें भारत तथा छत्तीसगढ़ में नगरीय जनसंख्या और नगरों की संख्या में हुए परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन के अनुसार नगरीकरण के प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन, शिक्षा एवं रोजगार के अवसर, औद्योगिकीकरण, परिवहन तथा व्यापारिक सुविधाओं का विकास हैं। छत्तीसगढ़ में नगरों की संख्या 1901 में 16 से बढ़कर 2011 में 182 हो गई तथा नगरीय जनसंख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अध्ययन में नगरीकरण की प्रवृत्ति को धीमा (1901–1931), मध्यम (1931–1961) और उच्च (1971–2011) तीन कालों में विभाजित किया गया है। जिलावार नगरीकरण के स्तर में भी काफी अंतर पाया गया। दुर्ग, कोरबा, रायपुर और कोरिया में नगरीकरण का स्तर उच्च रहा, जबकि जशपुर में यह अपेक्षाकृत न्यून रहा। औद्योगिक विकास, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, परिवहन, प्रशासनिक सुविधाएँ और रोजगार के अवसर उच्च नगरीकरण वाले क्षेत्रों के प्रमुख आधार रहे।

मुख्य शब्द: *नगरीकरण, नगरीय जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण, ग्रामीण-नगरीय प्रवास, नगर विकास, छत्तीसगढ़, नगरीकरण की प्रवृत्ति, नगरीकरण का स्तर, नगरीय विकास, रोजगार, परिवहन।*

प्रस्तावना:– विभिन्न युगों में पेज युग 3000ई. पूर्व से 1500 ई.पू मे नगरो का विकास नगर घाटी में सिंधु घाटी सभ्यता के रूप मे हुआ। पाश्चत्य तथा भारतीय विद्वानो के उत्तर व्यापार के कारण नगरो का विकास हुआ। नगरीयकरण माध्यमों की आवश्यकता एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति के वस्तु की अवस्था में परिवर्तित किये गये तथ्यो को हम सस्कृति कहते। मूलभूत तत्व जैसे रोटी कपड़ा और मकान आदि मनुष्य को आसानी से पूर्ति होती है। किन्तु जहां पर दबाव जनसंख्या का दबाव पड़ता है वहां मूलभूत तत्व की पूर्ति नहीं हो पाती है। अवाश्यकता उत्पादन उपभोग विपणन की सुविधाये में जनसंख्या के कारण विकसित होती है और वहां एक नगर का स्वरूप विकसित होता है एवं छोटे नगर बड़े नगरों में बदल जाते है।

समस्या:

जनंसख्या, दबाव के बीच नगरो का निमार्ण उससे उत्पन्न विभिन्न श्रेणी के मध्य स्तर तथा प्रवृत्ति को बताना ही शोध पत्र का मुख्य समस्या का अध्ययन करना है।

पूर्व साहित्य का अवलोकन:

प्रो. छत्तीसगढ़ की नगरीयकरण की प्रकृक्ति डॉ. अनिल सिन्हा ने 1996 मे दिये गये लेख का अध्ययन पर प्रकाश डाला जिसमें विभिन्न दी गई नगरों की श्रेणी का अध्ययन किया। जिससे उदेश्य प्रवृत्ति नगरो की प्रवृत्ति बताना था।

शोध का उदेश्य:

नगरो को विकास मे विभिन्न कारण का अध्ययन कर जनसंख्या दबाव के आधार पर नगरो का विकास एवं स्तर तथा प्रवृत्ति को प्रस्तुत करना है।

परिकल्पना:

नगरीयकरण के कारणों को ज्ञातकर जनसंख्या दबाव की वृद्धि द्वारा जनसंख्या प्रवृत्ति को स्पष्ट करना है।

अध्ययन क्षेत्र:

छत्तीसगढ़ के राज्य विस्तार 17°46′ उत्तरी अक्षांश से 24°8′ उत्तरी देक्षांश तथा पूर्वी अक्षांश 80°15′, पूर्वी देक्षांश से 84°24′ पू. देशांतर के मध्य स्थित है क्षेत्रफल 135194 वर्गकिमी. है। उत्तर से दक्षिण लम्बाई 640 किलोमीटर तथा पूर्व से पू. के बीच की लंबाई लगभग 336 किलोमीटर है। जनसंख्या 25540196 है। आंकड़ों का स्त्रोत प्रविधि तंत्र अध्ययन हेतु आंकड़ों द्वितीय आंकड़ों का उपयोग किया गया।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. संगीता शुक्ला सहायक प्राध्यापक भूगोल, शासकीय बिलासा कन्या, महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

How to cite this article:
शुक्ला संगीता & गढ़वाल अर्चना (2026). छत्तीसगढ़ में नगरीकरण की प्रवृत्ति एवं स्तर. Journal of Research and Development, 18(7), 179–183. https://doi.org/10.5281/zenodo.21944518

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.21944518
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

प्रवृत्ति जानने तथा स्तर का अध्यान करने हेतु विभिन्न वर्षों के आंकड़ों का प्रतिशत के द्वारा अध्ययन किया गया।

प्रस्तुत शोध पत्र स्वरूपः

नगरीकरण के कारण

1. स्वतः ही जनसंख्या बढ़ती है।
2. शिक्षा एवं अन्य कार्य हेतु ग्रामीण व एवं नगरों से जनसंख्या बड़े नगरों की ओर जाती है नगरीकरण होता है।
3. औद्योगिक बड़े पैमाने में होता है जिससे नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती है।
4. सरकार की नीतियाँ जो औद्योगिकरण पूंजीवाद, अर्थ व्यवस्थावादी एवं बहु राष्ट्रीय एवं निगमों की स्थापना को बढ़ावा मिलता है।

भारत में जनसंख्या 2, 4, 6, 8, 10, 12, 14, 16 की तरह मात्रात्मक रूप में बढ़ती जाती है। लेकिन कृषि संसाधन अथवा खाद्यान्न 1, 2, 3, 4, 5 के रूप में बढ़ता है जिससे मूलभूत बुनियादी सुविधा मेंनही मिल पाती है। सघन बस्तियों का नर्माण रहन–सहन के निम्न स्तर, निस्तारी सुविधाओं का अव्यवस्थित होती है जिसमें परिवहन शिक्षा स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इन सभी सुविधाओं को व्यवस्थित करने हेतु मानव संसाधन कुशल एवं अकुशल श्रमिकों की मांग बढ़ने लगी जिससे जनसंख्या में वृद्धि होने लगी।

छत्तीसगढ़ में 1901 में नगरों की संख्या 16 थी जो 2011 में 171 में नगर बढ़ गई है। छोटे नगरों से बड़े नगरों की ओर जनसंख्या का आकर्षण विपणन वितरण उपभोग, उत्पादन के कारण भारी मात्रा में बढ़ने लगा है। उद्योगों की स्थापना वहां होती है, जहां पर आवश्यक तत्व जैसे कच्चा माल जलपूर्ति विद्युत आपूर्ति श्रम, बाजार, परिवहन, संचार के साधन होते है। संयोग से एक समान सुविधा वाले स्थल नगर ही बसे है। जिसके समीप उद्योगों की स्थापना थी, बाद में वे नगरों के रूप में विकसित होते है। रेकिंग के अनुसार (सारणी क्रमांक 01)

भारत में नगरीयकण की प्रवृत्ति

तालिका क्रमांक 01

जनगणना वर्ष	भारत के नगर की संख्या	कुल जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या (करोड़ो में)	छ.ग. के नगरो की संख्या	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या छ.ग.	दशकीय नगरीय जनसंख्या की वृद्धि	नगरीय जनसंख्या वार्षिक प्रतिशत	छ.ग. के नगर संख्या
1901	1916	23-83	2-59	16	10-84			16
1911	1908	25-21	2-59	12	10-29	0-35	0-03	12
1921	2048	25-13	2-81	16	11-18	8-27	0-79	16
1931	2220	27-89	3-35	18	11-22	19-12	1-75	18
1941	2427	31-87	4-42	24	13-86	31-97	2-77	24
1951	3060	36-10	6-24	27	17-25	41-42	3-47	27
1961	2700	43-92	7-89	38	17-97	26-41	2-34	38
1971	3126	54-82	10-91	46	19-91	38-23	3-21	46
1981	4029	68-33	15-95	56	23-87	46-14	3-83	56
1991	4689	84-43	21-72	95	25-72	36-19	3-09	95
2001	5161	102-87	28-61	97	27-8	31-72	3-13	97
2011	7935	121-08	7-71	182	31-16	31-80	3-18	182

छत्तीसगढ़ के नगर संख्या

ग्राफ क्रमांक 01

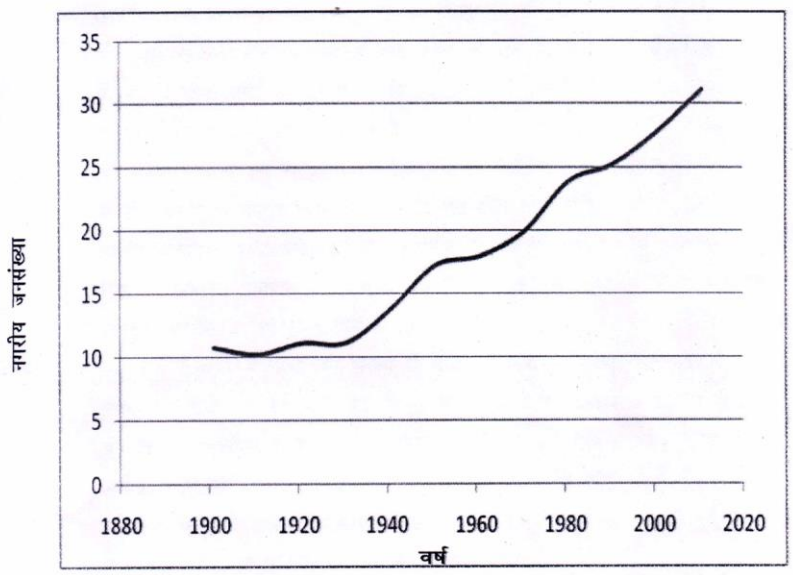

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

भारत में नगरों की संख्या 1901 में 1916 थी जिससे जनसंख्या 2.59 करोड जनसंख्या विकास करती थी इसके पश्चात् बड़े नगर कलकत्ता 1488323, जनसंख्या प्रथम नगर के रूप में थी। मुंबई 812912 चेन्नई 594396 जो क्रमशः दूसरे तथा तीसरे बड़े नगर के रूप में थे।

2011 में नगरो की संख्या 7935 हो गई और 37.71 करोड जनसंख्या निवास करती है। छत्तीसगढ़ में 1901 में नगरों की संख्या 16 थी जो 2011 में 11.37 गुना बढ़ गई है। छोटे नगरों से बड़े नगरों की ओर जनसंख्या का आकर्षण विपणन, वितरण, उपयोग, उत्पाद कारण भारी मात्रा में बढ़ने लगा है। उद्योगों की स्थापना वही होती है जहां आवश्यक तत्व जैसे कच्चामाल जलपूर्ति विद्युत अपूर्ति श्रम, बाजार परिवहन संचार के साधन होते है। संयोग से एक समान सुविधा वाले स्थल नगर ही रहे है। जिसके समीप उद्योगों की स्थापना होती रही या जहां उद्योग की स्थापना थी बाद में वे नगरों के रूप में विकसित होते है। (सारणी क्रमांक 01 एवं ग्राफ क्रमांक 01)

उपरोक्त तालिका से नगरीयकरण की प्रवृत्ति को बताना है। 1901 में जनसंख्या में कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 10.84 प्रतिशत या 1911 तथा 1921 में क्रमशः 10.29 प्रतिशत तथा 11.18 प्रतिशत दशकीय वृद्धि 1911 तक 1921 मे. 0.35 तथा 8.27 थी। 1931 में नगरीय वृद्धि 19.12 प्रतिशत और 1941 में नगरों में वृद्धि के कारण 31.97 प्रतिशत जनसंख्या में वृद्धि हो गई। 1951 में पुनः नगरों की संख्या 3060 थी अतः नगरीय जनसंख्या में 41.42 प्रतिशत की वृद्धि हो गई। 1961 में नगरों की संख्या 2700 थी जो 1951 की तुलना में कम हो गई। जिससे कारण नगरीय जनसंख्या दशकीय वृद्धि मात्र 26.41 प्रतिशत रहा जनसंख्या घटने का एक मात्र कारण छोटे नगर बड़े नगरों में विलय हो गये। या नगरों की परिभाषा के अनुसार मान्यता तथा दशाओं को पुरा नही कर पाये है।

सन् 1981 में नगरों की संख्या 4029 थी जबकि जनसंख्या में वृद्धि 46.14 हो गई। सन् 1911 से 2011 में नगरों की संख्या के साथ वार्षिक वृद्धि हुई क्रमशः 3.09 प्रतिशत, 3.13 प्रतिशत, 3.18 हो गई सन् 1951 से 2011 में जनसंख्या में 6 गुना वृद्धि हो गई। इस तरह देश की नगरीय जनसंख्या 1901 से 2011 के दौरान 110 वर्षों में लगभग 15 गुनी हो गई है।

छत्तीसगढ़ से 1901 में नगर संख्या 16 एवं जनसंख्या का प्रतिशत 3.08 प्रतिशत या छत्तीसगढ़ में 1911 नगरों की संख्या 12 थी जो 1901 से नगर की संख्या कम थी। नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 2.44 प्रतिशत या नगरो की संख्या कम होने के कारण छोटो नगरो बड़े नगर में विलंब हो गये। जिसके कारण नगर संख्या कम हो गई। सन् 1921 से 2011 तक नगरों की संख्या बढ़ गई किन्तु 1921 से 1981 नगरों की संख्या सामान्य रूप से बढ़ती रही किन्तु 1991 से 2011 तक सबसे नगरों की संख्या में होने का मुख्य कारण जनसंख्या में वृद्धि का होना पाया गया। 1991 से 2011 तक नगरीय जनसंख्या 14.69 प्रतिशत, 17.40 प्रतिशत, 29.09 प्रतिशत, 23.24 प्रतिशत हो गई जिसका दशकीय प्रतिशत 4.31 वृद्धि हुई किन्तु 1991 में 2.11 में वृद्धि कम हुई।(सारणी क्रमांक 2 एवं ग्राफ क्रमांक 2)

2011 में नगरों की संख्या में वृद्धि के साथ जनसंख्या हुई। नये 2011 के नगरों की संख्या में तो वृद्धि हुई किन्तु यह वृद्धि 2.69 प्रतिशत दशकीय वृद्धि है क्योंकि ये मध्यप्रदेश से संलग्न होने कारण कुछ लोग छत्तीसगढ़ में रह गये कुछ लोग मध्यप्रदेश में चले गये। जिससे जनसंख्या में वृद्धि कम हो गई। 2011 में नगरों की संख्या में वृद्धि के साथ विकास हुआ इसलिए नगरीयकरण तेजी से हुआ जिससे नगरीय जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत 20. 09 से 23.24 प्रतिशत था।

छत्तीसगढ़ के नगरीकरण की प्रवृत्ति को भी बताने का प्रयास किया गया है जिससे हमने तीनों में बांटा है :–

1. 1901 में नगरीय जनसंख्या 3.08 प्रतिशत थी और 2011 में 23.24 प्रतिशत थी। जो लगभग 8 गुनी हो गई। छत्तीसगढ़ के नगरीयकरण की प्रवृत्ति को भी बताने का प्रयास किया गया है जिसे हमने तीन भागो में बाटा है :–

1. धीमी नगरीयकरण काल :–

यह काल 1901 से 1931 तक धीमा था जिसमें छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 1901 में 3.08 प्रतिशत थी। इस समय प्राकृतिक प्रकोप जैसे अकाल, सुखा, महामारी हैजा आदि बिमारियो का प्रकोप रहा। इस प्रकार 1931 में 3.42 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या थी।

2. मध्यम नगरीयकरण कालः–

यह काल 1931 से 1961 तक मध्यम नगरीयकरण का काल या इन दिनों नगर का विकास उद्योगों के कारण हुआ। प्राकृतिक प्रकोप से सुरक्षित रहा। चिकित्सा जैसी सुविधाओं के कारण जनसंख्या आदि की वृद्धि होती रही। 1931 में 3.42 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या थी एवं 1961 में 8.33 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या थी।

3. उच्च नगरीयकरण कालः– यह काल 1971 से 2011 तक उच्च नगरीयकरण काल क्रमशः नगरीय जनसंख्या 10.38, 14.69, 17.40, 20.09, 23.24 तक जनसंख्या बढ़ती गई जिसका कारण विकसित स्वास्थ्य सेवा की उपलब्धता एवं नई तकनीकी का विकास कृषि क्षेत्र के संबंध में रहा इसलिए उच्च नगरीयकरण में वृद्धि होती रही। रहा। 1971 में 10.38 प्रतिशत था इस समय गांव से नगर की ओर रोजगार हेतु प्रयास मृत्यु दर में कमी से प्राकृतिक वृद्धि दर में बढ़ोत्तरी तीव्र औद्योगिक विकास परिवहन विकास आदि है। शहरों में बढ़ते रोजगार के अवसरों ने ग्रामीण जनता को बड़े स्तर पर आकर्षित किया है।

छत्तीसगढ़ में नगरीयकरण का स्तर इस प्रकार है :–

उच्चतम नगरीयकरणः– दुर्ग, कोरबा, रायपुर कोरिया में 38.41 प्रतिशत, 36.98 प्रतिशत, 36. 49 प्रतिशत, 31.19 प्रतिशत है। नगरीयकरण उच्चतम स्थिति को बनाया है। यहां प्राकृतिक संसाधन (कोयला) एव उद्योगों की बहुलता प्रशासनिक एवं परिवहन साधन की बहुलता और शैक्षणिक स्तर की अधिकता है। कोरबा में भारत एल्यूमिनियम कारफेरेशन, नेशनल, थर्मलपावर, कार्पोरेशन, दुर्ग में भिलाई स्टील प्लांट इससे संबंधित छोटे मध्यम प्रकार के उद्योग के जमा एवं परिवहन के साधनों का विकास के कारण नगरीयकरण उच्च है।

मध्य उच्चतम नगरीयकरण स्तरः– विलासपुर जिलों मध्य उच्च स्तर 25.50 प्रतिशत जहां जनसंख्या निवास करती है यहां जनसंख्या कोल फील्ड लिमिटेड का मुख्यालय रेलवे जोन होने के कारण एवं छोटे स्थानों पर लोहस्पात उद्योग, सुधा पॉवर लिमिटेड बिजली उत्पादन आदि के कारण नगरीयकरण का स्तर मध्य उच्चतम स्तर है।

3. मध्यम नगरीयकरण स्तरः– इस स्तर में धमतरी, दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा, राजनांदगांव, रायगढ़, नारायणपुर, जांजगीर–चांपा, बस्तर, महासंमुद, बीजापुर, कबीरधाम, सरगुजा, उत्तर बस्तर कांकेर के क्रमशः 18.66 प्रतिशत, 18.04 प्रतिशत, 17.73 प्रतिशत, 16.49 प्रतिशत, 15. 78 प्रतिशत 13.90 प्रतिशत 13.70 प्रतिशत, 11.64 प्रतिशत, 11.60 प्रतिशत, 10.62 प्रतिशत, 10. 38 प्रतिशत, 10.25 प्रतिशत है जहां पर प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता एवं उस पर आध शारित उद्योग कांड नही पर कोयला शक्ति संसाधन की प्रचुरता बस्तर में लोहा, डोलोमाईट, चूना की प्रचुरता के कारण उद्योगों का विकास हुआ है, रायगढ़ राजनांदगांव, व्यापार एवं वाणिज्य केन्द्र रहे है। और दूसरे छोटे उद्योग विकास हुआ है।

4. न्यून नगरीयकरण स्तरः– जशपुर नगर में न्यून स्तर है जहां जनसंख्या 8.92 प्रतिशत निवास करती है। यह एक पहाड़ी क्षेत्र है वनों से आच्छादित है जहाँ जनजाति का बहुलता है और प्राकृक्तिक साधनों की बहुलता होने के बावजूद न्यून नगरीयकरण स्तर पाया जाता है।

नगरो की श्रेणी

तालिका क्रमांक 03

		नगर की संख्या		कुल नगर की संख्या	निवासित जनसंख्या
श्रेणी	जनसंख्या आकार				
		2001	2011		
1.	100000	07	63.11	9	61.78
2.	50000–99999	05	8.92	4	4.17
3.	20000–49999	20	13.18	27	13.11
4.	10000–19999	32	11.08	48	11.22

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

5.	5000–9999	20	3.73	70	8.71
6.	5000	–	–	13	0.98 प्रतिशत
		84		171	

उपर्युक्त श्रेणीकरण से नगरों की प्रवृत्ति का पता चलता है। 2011 में प्रथम श्रेणी के 9 नगर है जहां जनसंख्या 61.78 प्रतिशत निवास करती है। द्वितीय श्रेणी के 4 नगर में जहां पर 4.17 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। तृतीय श्रेणी नगर 27 है यहां जनसंख्या 13.11 प्रतिशत चतुर्थ के 48 नगर है। जनसंख्य 11.22 प्रतिशत है। पांचवी श्रेणी के नगर 70 है जिसमें जनसंख्या 8.78 प्रतिशत है। जो नगरीकरण की प्रवृत्ति को दर्शाता है।

श्रेणी के अनुसार नगरों की संख्या 2001 एवं 2011

सारणी क्रमांक 04

श्रेणी	जनसंख्या	कुल नगर संख्या 2001	कुल नगर संख्या 2011
1.	100000 एवं अधिक	7	9
2.	50000–99999	7	6
3.	20000–49999	22	31
4.	10000–19999	38	51
5.	5000–9999	23	72
6.	5000 से कम	–	13
		97	182

श्रेणीवार नगरों की संख्या प्रथम श्रेणी में 2001 में नगरों की संख्या 7 तथा 2011 से बढ़कर नगरों की संख्या 9 हो गई है। द्वितीय श्रेणी में 2001 में नगर समूह की संख्या 7 तथा 2011 में नगर की संख्या कम होकर 6 नगर संख्या रह गई है। जो कि प्रथम श्रेणी मड़े कुछ नगर शामिल हो गये है। तृतीय श्रेणी में 2001 में 22 नगर संख्या है तथा 2011 में 31 नगर संख्या हो गई है। चतुर्थ श्रेणी में 2001 में 38 नगर संख्या थी, बढ़कर 2011 में 51 नगर संख्या बढ़ गये है। पांचवी नगर संख्या 2001 में 23 तथा 2011 में 72 नगर बढ़ गये। इस श्रेणी नगर संख्या 5000–9999 की जनसंख्या वाले नगर आने लगे है। घर की श्रेणी 2001 में इस श्रेणी के कोई नगर नहीं है। 2011 में नगर की संख्या 13 हो गई है। जो 5000 से कम के जनसंख्या से नगर को शामिल किया गया है। इस तरह कुल नगर संख्या 2011 में 182 नगर है।

नगरीय जनसंख्या के रैकिग के अनुसार नगरीकरण का स्तर सारणी क्रमांक 05

सारणी क्रमांक 05

क्र	जिला	2011 नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	2011 में रैंक
1	दुर्ग	38.41	1
2	कोरबा	36.98	2
3	रायपुर	36.49	3
4	कोरिया	31.19	4
5	बिलासपुर	25.50	5
6	धमतरी	18.66	6
7	द.बस्तर दंतेवाड़ा	18.04	7
8	राजनांदगांव	17.73	8
9	रायगढ़	16.49	9
10	नारायणपुर	15.78	10
11	जांजगीर–चांपा	13.90	11
12	बस्तर	13.70	12
13	महासमुंद	11.64	13
14	बीजापुर	11.60	14
15	कबीरधाम	10.62	15
16	सरगुजा	10.38	16
17	उ.बस्तर कांकेर	10.25	17
18	जशपुर	8.92	18

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

छत्तीसगढ़ में नगरीयकरण की प्रवृत्ति की स्तर 2011

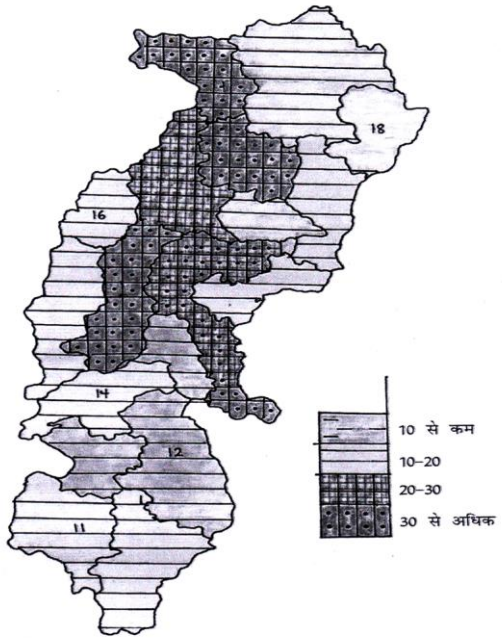

रेकिंग के अनुसार वर्गीकरण

0&10&	जशपुर, बीजापुर, कबीरधाम, सरगुजा, उत्तर बस्तर
10&20&	धमतरी, द.वस्तर, दंतेवाड़ा, राजनंदगाव, रायगढ, नारायणपुर, जाजगीर–चांपा, बस्तर, महासमुंद
20&30&	बिलासपुर
30&	अधिक दुर्ग, कोरबा, रायपुर, कोरिया

संदर्भ ग्रंथ :–

1. जीट बी.सी. भारत का भूगोल, पंचशील प्रकाशन जयपुर।
2. चंदना आर.सी. (1995) जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर पृ.पृ. 261–262